



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

नाटकीयता का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

डॉ. सतीश पावडे

सहायक प्रोफेसर

प्रदर्शनकारी कला विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

9372150158

satishpawade1963@gmail.com

सार-

इरविंग गोफमैन एक विश्वविख्यात समाजशास्त्री एवं मानव वर्तनशास्त्री हैं। रंगमंचीय प्रतिमानों, उपमानों के आधार पर उन्होंने नाटकीयता का समाजशास्त्रीय सिद्धांत रखा है। वे रंगमंचीय नाट्य प्रदर्शन की नहीं अपितु मनुष्य के दैनंदिन व्यवहार में अंतर्निहित नाटकीयता का विचार करते हैं। नाटकीयता के तत्वों का प्रयोग वे समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, मानव वर्तनशास्त्र आदि के आधार पर करते हैं। यहाँ रंगमंच और नाटकीयता उनके सिद्धांत को रूपक की दृष्टि प्रदान करती है। नाटकीयता का यह समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य है। नाटकीयता का यह यथार्थवादी परिदृश्य है। यहाँ प्रत्येक मनुष्य अभिनेता है और उसका जीवन व्यवहार रंगमंच है।

बीज शब्द- नाटकीयता, समाजशास्त्र, मानवी वर्तनशास्त्र, इरविंग गोमैन, प्रतीकात्मक अंतःक्रिया, अनौपचारिक अभिनेयता

इरविंग गोफमैन ने 1956 में एक पुस्तक लिखी थी, जिसका शीर्षक था 'द प्रेजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरी डे लाईफ' इस पुस्तक में गोफमैन ने रंगमंच को रूपक के रूप में निर्वाचित किया। इस रूपक दृष्टि से उन्होंने नाट्यप्रदर्शन का विश्लेषण किया है। नाटक के प्रदर्शन का तात्पर्य समाज का ही प्रदर्शन होता है, यही गोफमैन की मान्यता थी। इसे ही उन्होंने नाटकीयता का एक समाजशास्त्र भी कहा है। आधुनिक काल में उन्होंने इस नाटकीय समाजशास्त्र का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस सिद्धांत में मानवीय अंतःक्रिया के तत्व के रूप में समय, स्थान और दर्शक को महत्वपूर्ण माना गया है। यहाँ अभिनेता की भूमिका को वे केंद्र में रखते हैं। अभिनेता की सफलता तथा असफलता को वे दर्शक की दृष्टि से आंकते हैं। यह सभी प्रक्रिया मानवीय अंतःक्रिया की प्रक्रिया है, जिसमें स्थान, समय तथा दर्शक के साथ अभिनेता एक महत्वपूर्ण इकाई होता है। अपितु गोफमैन रंगमंचीय प्रभाव को रंगमंच से परे जाकर भी देखते हैं। यहाँ समाज ही रंगमंच के रूप में होता है। आसपास का परिवेश, व्यक्ति एवं क्रियाएं - प्रतिक्रियाएं नाटकीयता में बदल जाती हैं यथार्थ में, रंगमंच के बगैर भी। गोफमैन इसे प्रतीकात्मक सामाजिक अंतःक्रियावाद भी कहते हैं।

गोफमैन मानवी व्यवहार के कारण (Reason) का विश्लेषण करने के बजाय वह मानवी संदर्भ (Human Reference) का विश्लेषण करते हैं। हम समाज में समय एवं स्थानानुसार अलग-अलग व्यवहार करते हैं और क्यों? हमारी भूमिकाएं (व्यवहार) भी समय-स्थानानुसार बदलते हैं। इस बदलाव को प्रतीकात्मक अंतःक्रिया के



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

रूप में गोफमैन देखते हैं। इसे सामाजिक कार्यवाही के रूप में भी वे स्पष्ट करते हैं। यह विभिन्न सामाजिक स्थितियों पर निर्भर होता है। सामाजिक संपर्क से अथवा संपर्क में मानवीय अंतःक्रियाएं भी परिवर्तित होती हैं। यह सामान्य मनुष्य का जीवन- दर्शन होता है जैसे रंगमंच पर अभिनेता का। गोफमैन मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को एक विशेष व्यक्ति के रूप में समाज में प्रदर्शित करना चाहता है, दूसरे पर अपना विशिष्ट प्रभाव डालना चाहता है। यह एक प्रभाव प्रबंधन का ही कार्य होता है। मानवीय अंतःक्रियाओं का संदर्भ देते हुए पुनः गोफमैन कहते हैं कि सामान्य जीवन में मनुष्य एक अभिनेता की तरह बर्ताव करता है। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया होती है। इसे आत्मप्रदर्शन की प्रक्रिया भी कहा जा सकता है।

गोफमैन की भूमिका को सहजता से समझा जा सकता है। वह रंगमंच पर अभिनेता के अभिनय प्रक्रिया को समाज में मनुष्य के क्रिया-कलाप से जोड़कर देखते हैं। उसकी नाटकीयता का अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करते हैं। उनके इस सिद्धांत को जानने के लिए गोफमैन के सात तत्त्वों के बारे में अनिवार्य रूप से जानना होगा। यह सात तत्त्व निम्नानुसार हैं -

1. आपकी भूमिका पर आपको विश्वास होना चाहिए। यह विश्वास महत्वपूर्ण होता है। वे आपकी स्थिति को समझेंगे और आकेंगे भी। यहाँ आप अभिनेता हैं और सामने वाला व्यक्ति दर्शक।
2. यहाँ आप एक मुखौटा धारण किए हो, जो बदलते रहता है।
3. नाटकीय एहसास की दृष्टि से आप अपना प्रभाव सामनेवाले व्यक्ति पर छोड़ना चाहते हैं।
4. आदर्शिकरण के रूप में आप अपने आप को प्रदर्शित करना चाहते हैं। अपने विशिष्ट प्रभाव को कायम करना चाहते हैं।
5. अभिव्यंजक नियंत्रण द्वारा आप अपनी भूमिका में बने रहना चाहते हैं। अपने धारण किए चरित्र का संकेत देते हैं।
6. गलत संदेश जाने के प्रति सावधानी बरती जाती है। आप पर अविश्वास नहीं रखने का प्रयास किया जाता है।
7. इस संवाद में आप अपने कुछ रहस्यों को छिपा कर रखते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि सामनेवाले की रुचि आप में बढ़े।

उपरोक्त सातों तत्त्व अभिनेता तथा दर्शक जैसे ही आप और सामनेवाले व्यक्ति पर भी लागू होते हैं। एक पद्धति से यह मानवी व्यवहार और उसके अंतःसंबंधों की जांच करता है। वे मनुष्य को अभिनेता एवं सामनेवाले व्यक्ति को दर्शक के रूप में देखते हैं। इसे ही मनुष्य की नाटकीय अंतःक्रिया कहा गया है। सामने वाले रंगमंच पर अभिनेता वस्तुतः औपचारिक प्रदर्शन करता है। दर्शक उसके अनुषंगी मानसिक क्रियाकलाप करता है। अपितु गोफमैन यहाँ दर्शक की व्यक्तिगत रंगमंचीय क्रियाकलाप का विश्लेषण करते हैं। अपितु सफल नाट्यप्रदर्शन दोनों का अंतिम लक्ष्य होता है। अभिनय, अनुभव इन दोनों स्थानों पर दर्शक मात्र अनिवार्य होता है।

मुख्य रंगमंच के अलावा नेपथ्यगृह, रंगमंच के पीछे का विश्राम अथवा प्रसाधन कक्ष (नेपथ्यगृह) भी गोफमैन की दृष्टि से रंगमंच ही है। अनौपचारिक रंगमंच। यहाँ वह अभिनेता नहीं बल्कि एक मनुष्य होता है। रंगमंच



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

में लिप्त अपितु रंगमंच की बाहरी दुनिया का यह चित्र होता है। यहाँ अभिनेता चरित्र से बाहर होता है। यहाँ असल में अभिनेता तो उपस्थित है अपितु असली दर्शक नहीं। यहां प्रदर्शन की औपचारिक बाधा भी नहीं होती है। यहां सभी के क्रिया-कलाप अनौपचारिक होते हैं। गोफमैन इस नेपथ्यगृह को भी रंगमंच के रूप में देखते हैं। तात्पर्य यही है कि गोफमैन 'मानवी व्यवहार' में निहित नाट्यात्मकता को विश्लेषित करना चाहते हैं। इसी नाट्यात्मकता का प्रबंधन वह व्यक्ति स्वयं करता है। यह सभी प्रक्रिया मूलतः मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। यह एक रहस्यमय प्रक्रिया होने की बात भी गोफमैन करते हैं।

मनुष्य अपने जीवन में परस्पर संवाद में, मुलाकात में प्रभाव डालने और उसके प्रबंधन का विचार एवं कार्य करता है। रक्षात्मक तकनीक भी अपनाता है। गलतियाँ छिपाने के लिए सुरक्षात्मक तकनीक अपनाता है। इस दृष्टि से आवश्यक तत्व इस प्रकार बताए गए हैं -

1. नाटकीय निष्ठा – सामनेवाले को अपने प्रति वफादार बनाये रखना। उसके लिए योग्य प्रयास करना।
2. नाटकीय अनुशासन – समर्पित होकर अपना प्रदर्शन जारी रखना। आत्मनियंत्रण रखना।
3. नाटकीय सावधानी – जोखिम कम करना, गलती न करना, संवाद में शारीरिक अभिनय में सावधानी बरतना।
4. समय और स्थान की सुनिश्चिती – वैयक्तिक नाटकीय प्रदर्शन हेतु समय और स्थान की सुनिश्चिती करना।
5. प्रतिभागी संवादक (दर्शक) की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

इन सभी तत्वों को व्यापक दृष्टि से गोफमैन ने विश्लेषित किया है। नेपथ्यगृह के सत्व के रूप में भी इसे देखा जाना चाहिए। यहां गोफमैन मुख्य रंगमंच (Front stage) और नेपथ्यगृह (Back Stage) का फर्क नाट्यप्रस्तुति के रूप में समझाते हैं। गोफमैन का क्षेत्र रंगमंच से बाहर का क्षेत्र है। यही समाज है, सार्वजनिक स्थल है और सोशल मीडिया भी है। अपनी छवि, अपनी भूमिका, अपना व्यक्तित्व एवं चरित्र हर मनुष्य केंद्र में रखता है। उपयोगकर्ता इसमें अपना नियंत्रण चाहता है। वह सामनेवाले व्यक्ति पर प्रभाव डालकर उसका मूल्यांकन करना चाहता है। यह नियम, स्थिति मुख्य रंगमंच पर उपस्थित अभिनेता के लिए भी लागू होता है।

गोफमैन का यह सिद्धांत सामाजिक क्रियाकलापों में नाटकीयता की जांच एवं मानवी बर्ताव को विश्लेषित करता है। मानवीय संदर्भों का अर्थ जानने का प्रयास करता है। मनुष्य की अनौपचारिक अभिनेता की तुलना यहाँ रंगमंचीय औपचारिक अभिनेता के साथ की जा रही है। यह अनौपचारिक नाटकीय प्रदर्शन और प्रबंधन भी है। इस प्रक्रिया को वे रोजमर्रा की जिदगी का रंगमंच कहते हैं। अर्थात् मानवीय सामाजिक कृत्यों का सबसे उन्नत नाटकीय सिद्धांत भी इसे कहा जा सकता है। अर्थात् गोफमैन का यह सिद्धांत मानवी बर्ताव के सामाजिक क्रिया - प्रतिक्रिया को देखता है और मनुष्य के आंतरक्रिया को संचालित करता है। आसपास की सामग्री यह नेपथ्य सामग्री की भूमिका अदा करते हैं। इस सभी सैद्धांतिक विश्लेषण के केंद्र में वे रोजमर्रा के जीवन को ही रखते हैं। ब्रिसेट डेनीस तथा चार्ल्स एडगलीइस इसे थिएटर के रूप में जीवन' को समझने का स्रोत कहते हैं।

इरविंग गोफमैन (1922-1988) को कनाडाई-अमेरिकन समाजशास्त्री के रूप में जाना जाता है। वे सामाजिक जीवन को एक अंतःक्रियावादी दृष्टि से देखते हैं। इसी भूमिका को उन्होंने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

को नाटकीय परिप्रेक्ष्य में रखा है। सामाजिक संदर्भों में सामाजिक अंतःक्रिया का समाजशास्त्रीय अध्ययन उन्होंने किया। असाईलम्स, एनकाउंटर्स, बिहेवियर इन पब्लिक प्लेसेज, स्टीग्मा, इंटरैक्शन रिचुअल, स्ट्रैटेजिक इंटरैक्शन, फ्रेम एनालिसिस, जेंडर एडवर्टाइजमेंट आदि पुस्तकें उन्होंने लिखी। अपितु उनकी यह भूमिका एवं सैद्धांतिक विवेचन 'सेल्फ इन एवरी डे लाईफ' में संकल्पित हुआ है, जिसने सामाजिक अंतःक्रियावाद की भूमिका रखी। यही उनका मुख्या देन था। यह उनकी सैद्धांतिक भूमिका थी। उन्होंने अपने सिद्धांत की स्थापना के लिए नाट्यशास्त्रीय दृष्टिकोण को अपनाया है।

सामाजिक परिवेश में एक सजग व्यक्ति का अभिनेता स्वरूप प्रदर्शन मात्र एक सैद्धांतिक अभिव्यक्ति है। 'व्यक्ति एक अभिनेता तथा समाज एक मंच है' यह गोफमैन की मूल भूमिका है। गोफमैन कहते हैं कि नाट्यशास्त्रीय दृष्टिकोण नाट्यप्रदर्शनों और उन अभिनय के बीच समानता दिखाई देती है। अर्थात् यहां गोफमैन रंगमंच का प्रयोग एक रूपक के रूप में करते हैं। यह लोगों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन है। यह एक प्रकार का जनसंचारशास्त्रीय अध्ययन भी है। 'इंटर पर्सनल, इंटरा पर्सनल' जैसी अवधारणाएं भी यहां लागू होती हैं। यह व्यक्ति के सामाजिक प्रदर्शन की जांच करता है। गोफमैन कहते हैं 'लोग सामाजिक मुलाकातों में दूसरे पर पड़नेवाले प्रभाव को नियंत्रित करने का प्रयास किस तरह करते हैं, वे चाहते हैं कि उनका स्वागत सकारात्मक दृष्टि से किया जाए। वे चाहते हैं उन्हें विश्वसनीय माना जाए। साथ ही दूसरे लोग उस व्यक्ति की ईमानदारी, विश्वसनीयता और सामान्य उपयुक्तता की जांच करने में रुचि रखते हैं।' इस प्रक्रिया में चेहरे के भाव, तौर-तरीके, हावभाव, वेशभूषा, भाषा का प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। यहां गोफमैन ने नाट्यशास्त्रीय मॉडल को प्रयोग का आधार बनाया है, जो उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रभाव प्रबंधन का अध्ययन एवं विश्लेषण करता है।

इसे नाटकवाद (Theatricalism) भी कहा गया है। नाट्यशास्त्रीय अंतःक्रियाओं के मुख्य घटक के रूप में अभिव्यंजना के तत्त्व को यहां महत्वपूर्ण माना गया है। मानवीय अंतःक्रिया का यह दो तरफा दृष्टिकोण भी है। यह एक प्रतिक्रिया और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद भी है। इसे ही प्रदर्शन का भी सिद्धांत कहा गया है। भाव, अभिव्यक्ति, अभिनय की यह प्रचलित रंगमंच के बाहर की प्रस्तुति है। यहाँ गोफमैन रंगमंचीय नहीं अपितु बाहरी मनोरंगमंचीय प्रस्तुति की बात करते हैं। इस समाज में व्याप्त नाटकीय तत्वों के आधार पर समाज जीवन में घटित प्रसंगों, घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर निर्मित मनोसामाजिक रंगमंच (Sociopsychological theatre अथवा Psychosocial theatre) भी कहा जा सकता है।

निष्कर्ष-

इरविंग गोफमैन के इस नाटकीयता के समाजशास्त्रीय सिद्धांत को प्रकृतिवाद (Naturalism) तथा नाटकीयतावाद (Theatricalism) के आधार पर भी विश्लेषित किया जा सकता है। प्रतिक्रियात्मक मानवी अंतःक्रिया, अभिव्यंजना, सामाजिक मनोविज्ञान इस सिद्धांत के अनिवार्य तत्व हैं। गोफमैन का यह सिद्धांत सामाजिक क्रियाकलापों में नाटकीयता की जांच एवं मानवी बर्ताव को विश्लेषित करता है। यह मनुष्य एवं समाज के औपचारिक एवं अनौपचारिक व्यवहार की नाटकीय अध्ययन पद्धति है। प्रतिक्रियात्मक मानवी अंतःक्रिया



इसका आधार और लक्ष्य भी है। पारस्परिक मानवीय व्यवहार की सामाजिक नाटकीयता को यह सिद्धांत मानवी बर्ताव एवं उसके मनोविज्ञान से जोड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. Gofman, Irving. (1959), The Presentation of self in everyday life. New York: Doubleday Anchor Books.
2. Gofman, Irving. (1963), Behavior in public places. New York: The free press of Glencoe
3. Gofman, Irving. (1967), Interaction in rituals- essays on face-to-face Behavior. New York: Doubleday Anchor Books.
4. Gofman, Irving. (1981), forms of talk. Philadelphia: University of Pennsylvania press.
5. Gofman, Irving. (1971), Relation in public places. New York: Basics book.
8. Gofman, Irving. (1985), Theory of communication. New York: Doubleday Anchor Books.